कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक, खंड 01 (01): 28-29, 2021

फालसा फल एक गुण अनेक

आओ मिलकर उगाए फालसा की फसल

डा. चेतक बिश्नोई[1], डा. सुधा बिश्नोई एवं डा. अनुराग मलिक[1]

[1]वैज्ञानिक, पी.ए.यू-क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, बठिंडा-151001

*संबंधित लेखक: anuragmalik_swce2014@rediffmail.com

फालसा का वनस्पतिक नाम ग्रेविआ ऐसीआटिका है। यह मालवेसी (टिलीयसी) कुल का सदस्य है। फालसा एक छोटा झाडीनुमा पेड़ है। तथा इसके पत्ते खुले एवं चौड़े तथा पतझड़ में गिर जाते हैं। फालसा की उत्पत्ति स्थान भारत है। इसके साथ साथ यह पाकिस्तान, बंगलादेश, थाईलैंड व कम्बोडिया में भी पाये जा ते है। फालसा गर्मियों के लोकप्रिय फलो में से एक है, इसके अनोखे स्वाद की वजह से इसे हर कोई खाना पसंद करता है। फालसा छोटे.छोटे गोल अकार के गहरे बैगनी रंग के नरम, रसीले जिनका स्वाद खट्टा मीठा होता है। यह स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक फल है, गर्मी के मौसम में लू लगने और उससे होने वाले बुखार से बचने का कारगर इलाज है। पोषक तत्वों जैसे कैल्शियम, सोडियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, तांबा, लोह आदि तथा विटामिन, थायमिन, नायसिन, से भरपूर होने के अलावा यह रसीला तथा स्वादिष्ट फल होता है। यह एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे एंथोसायनिन तत्व का सर्वोत्तम प्राकृतिक स्रोत है, जिसके सेवन से रक्तचाप ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित किया जा सकता है।

e-ISSN No. 2583-0937

किस्में

फालसा की कोई भी प्रमानित किस्म उपलब्ध नहीं है। दोनों प्रकार की लम्बी एवं बोनी किस्में शुष्क क्षेत्रों के लिए मान्य है, बोनी किस्में अधिक उपज वाली होती है और इसके फल भी रसीले होते है

भूमि एवं जलवायु

इसको किसी भी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है परन्तु उपयुक्त जल निकास वाली बार्लु दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए अधिक उपयुक्त है। क्षतिग्रस्त भूमि जैसे बंजर, ककरीली खादर एवं बीहड़ आदि में भी इसकी खेती की जा सकती है। फालसा की खेती 6.5-9.5 पी एच मान वाली मृदा में भी सफलतापूवर्क कर सकते है। यह एक उष्ण तथा उपोष्ण जलवायु का पौधा है जिसको शुष्क एवं अर्धशुष्क जलवायु में भी सफलतापूवर्क उगाया जा सकता है।

बाग लगाना

फालसा का बाग लगाने के लिए भूमि को रेखांकित कर, पौधे से पौधे की दूरी 1.5 से 2 मीटर रखनी चाहिए। पौध रोपण से पूर्व 1 घनमीटर आकर के गढ़े तैयार करके मृदा तथा सड़ी हुए गली खाद 1:1 और 5 प्रतिशत क्विनलफॉस 50 से 60 ग्राम के मिश्रण से भरना चाहिए। नर्सरी में लगे हुए पौधे, जिनमें सुप्तावस्था में आने से पहले जनवरी फरवरी के महीने में पौध रोपण कर देने चाहिए। इसका मुख्य लाभ है जड़ो के साथ मिटटी की जरुरत नहीं होती।.

पौध प्रवर्धन

फालसा के पौधे मुख्य रूप से बीज द्वारा तैयार किये जाते है। बीजो की बुवाई फलो से निकलने के तुरंत बाद 15-20 सेंटीमीटर की ऊँची एवम 3 गुणा 1 मीटर की क्यारियों (नर्सरी बैड) में 1-2 सेंटीमीटर की गहराई पर की जाती है। बुआई का उत्तम समय जुलाई अगस्त होता है। बीज के उगने के लिए 15-20 दिन और पौधा रोपित करने के लिए 4-6 महीने की आवश्यकता होती है।

खाद एवं उर्वरक का प्रयोग

पौधो को अच्छी वृद्धि, अधिक फलों एवं पेड़ो को स्वस्थ रखने के लिए पौधो को 10 किलो गली-सड़ी हुए गोबर की खाद, तथा 50-75 ग्राम नाइट्रोजन जनवरी-फरवरी में तुरंत कटाई के बाद प्रतिवर्ष देने चाहिए। बरानी-खेती के लिए नाइट्रोजन की आधी मात्रा पोधो की तुरंत कटाई के बाद और आधी मात्रा फूल आने पर देनी चाहिए।

कटाई छंटाई

फालसा की खेती में कटाई छंटाई का विशेष महत्व है। लम्बी किस्म के लिए कटाई छंटाई जमीं से 1 से 1.2 मीटर की ऊंचाई पर एवं बोनी किस्म के लिए जमीं से 40- 60 सैटीमीटर की ऊंचाई पर उचित है। दिसम्बर जनवरी के महीनो में जब पौधा सुसुप्त अवस्था में होता है, तब उसकी किसी भी समय कटाई छंटाई की जा सकती है।

सिंचाई

नए पौधे को स्थापित करने के लिए एक-दो वर्ष सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। स्वस्थापित पौधे लम्बे समय तक बिना सिंचाई के भी अच्छी तरह से रह सकते है। सर्दियों में फालसा का पौधा अपनी पत्तिआ गिरा कर सुसुप्तावस्था में चला जाता है। फालसा में प्रथम सिंचाई, खाद डालने के बाद, फरवरी के दूसरे-तीसरे सप्ताह में की की जाती है। मार्च - अप्रैल में सिंचाई 20-25 दिन के अंतर पर करनी चाहिए और मई के महीने में इस अंतर को घटाकर 15-20 दिन कर देना चाहिए।

कीट नियंत्रण

पत्ते खाने वाली भुंडी

इनका प्रकोप शुष्क व अर्धशुष्क क्षेत्रों में जयादा होता है। यह भुंडी पत्तो पर गोल सुराख करके नुकसान पहुँचाती है। प्रौढ़ सायकाल के समय जमींन से निकल कर बहार आते है और रातभर पत्ते खाते रहते है और दिन निकलने से पहले जमींन में छुप जाते है। सायकाल के समय 500 मि. ली. क्विनलफॉस (ऐकालक्स) 25 ई. सी. को 500 मी ली. पानी मे मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करे।

पत्ते खाने वाली भुंडी

फलों की तुड़ाई

फालसा के पौधे में दूसरे वर्ष से ही फल लगने शुरु हो जाते है तथा तीसरे वर्ष में अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। फल मई के अंत में पकने शुरु हो जाते है और इसकी तुड़ाई जून महीने तक चलती है। फलों में जब लाल की बजाए गहरा बैंगनी रंग विकसित हो तभी इनकी तुड़ाई करनी चाहिए। इसके फलों को2-3 दिनों तक ही सुरक्षित रखा जा सकता है। अतः तोड़ने के बाद फलों को ज्यादा समय तक नहीं रखना चाहिए.

तुड़ाई उपरान्त रखरखाव एवं मंडीकरण

खेत से तोड़ने के तुरन्त पश्चात फलों की खेत की गर्मी कम करने के लिए प्रीकूलिंग करना बहुत जरूरी है, क्योंकि फालसा फल की भंडारण तथा उपयोग की अवधि 2-3 दिन ही होती है। इसके पश्चात इनको आकार तथा रंग के अनुसार दर्जाबन्दी करने से भी मूल्यवृद्धि ली जा सकती है। लाल फल तो फिर भी एक दिन तक स्टोर कीए जा सकते है परन्तु काले बैगनी फलों को तुरन्त मंडीकरण जरूरी है। फालसा फलों का रस तथा शरबत भी बनाया जा सकता है, जिससे और अधिक मूल्यवृद्धि होगी तथा स्टोरेज की संमस्त समस्या भी हल होगी।